श्रीजानकीवल्लभाय नमो नमः

श्रीहनूमते नमः

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

श्रीमते योगानन्दाचार्याय नमः

श्रीराममंत्र दीक्षा दर्पणः

श्रीरामावतार हिन्दुधर्मोद्धारक यतिराजेश्वरेश्वर आचार्यचक्रचूड़ामणि

श्रीसम्प्रदायप्रवर्तक आद्यजगद्गुरु श्रीस्वामीरामानन्दाचार्य चरणाश्रित

कपिलावतार श्रीमद्योगानन्दाचार्यवंशोद्भव अखिलजगदोद्धारक

अनन्तश्रीसमलंकृत स्वामी प० श्रीरामवल्लभाशरण शिष्यशिष्यस्य

निखिलनिगमागमपुराणेतिहासशास्त्रपारावारपारीण

धर्मचक्रवर्ती प्रस्थानत्रयीराघवकृपाभाष्यकार

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य पदसमलंकृत

श्रीस्वामीरामभद्राचार्य कृपाकटाक्षाश्रित

सीतारामदासेन

संकलितः

मङ्गलाचरणम्

कनकभवनखण्डे मण्डिते मुक्तजालै
र्विभूषितो वरवेषो नाट्यकेलिप्रयुक्तः ।
कमलवदनकान्ता मण्डले मोहनश्री
र्जयति जनकजायाः प्रेमपूर्णाम्बुजाक्षः ॥

ऋषिमुनिभिरुपास्यस्तर्क शास्त्रैरतर्क्यः
श्रुति सकल सुगीतः प्रीतिसाध्यो न चान्यैः ।
ममहृदये नवाब्जे यस्य वासोप्यजस्रं
जयति जनकजायाः वल्लभोऽसौ परेशः ॥

रामं स्वादिगुरुं नत्वा परंब्रह्मसनातनम् ।
द्विभुजं जानकीनाथं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥

सीताञ्चादिगुरुं नत्वा चिद्रूपां रामवल्लभाम् ।
श्रीरामसानिध्यवशात्सृष्टिस्थित्यंतकारिणीम् ॥

समस्त निगमाचार्य्यं सीताशिष्यं गुरोर्गुरुम ।
सर्वविद्याधिनाथंहि हनुमन्तं प्रणम्य च ॥

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम् ॥

जयति कवि कुमुद चन्द्रो हुलसी हृद्धर्षवर्धनस्तुलसी ।
सुजन चकोर कदम्बो यत्कविता कौमुदीं पिबति ॥

धन्या श्री वैष्णवी दीक्षा धन्या वात्सल्यता गुरोः।
धन्यास्ते कृतिनः लोके ये लभन्ते षडक्षरम्॥

दीक्षा का अर्थ :-

दीयते ज्ञान सम्बोधः क्षीयते पापसंचयः।
दीयते क्षीयते यस्मात्सा दीक्षेत्यभिधीयते॥ - स्मृति रत्नाकर
जो परमात्मा श्रीराम सम्बन्धी दिव्य ज्ञान देकर पापों का क्षय कर दे उसी को दीक्षा कहते हैं।

दीक्षा की आवश्यकता

प्रत्येक जीवात्मा अपने जीवन में सत्-चित्-आनन्द को खोजता है। नाना प्रकार की चेष्टाओं द्वारा सफलता और समृद्धि के द्वारा परम सुख को प्राप्त करने की अभिलाषा करता है परन्तु इस दुख के आलय और अशाश्वत संसार में सनातन सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती यही शाश्वत सत्य है। इस सत्य के बोध के अनन्तर अब जिज्ञासा होती है कि वह सनातन सुख कैसे प्राप्त होगा ? इसका उत्तर श्रुति इस प्रकार देती है कि *यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्। तदा विद्वान्पुण्यपापे विधुय निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति (मु० को० ३/१/३)* अर्थात् जब वह जीव उन परब्रह्म भगवान श्रीराम का दर्शन प्राप्त कर लेता है जो रुक्मवर्ण अर्थात् परम प्रकाशमय हैं, समस्त ब्रह्माण्डों के आदि कर्ता परमेश्वर हैं तथा निर्गुण ब्रह्मज्योति के मूल स्रोत हैं, उसी क्षण वह अपने पाप पुण्यों से मुक्त होकर परम सुख और शान्ति को प्राप्त कर लेता है। भगवान का साक्षात्कार करने हेतु भगवान के प्रति परम प्रेम ही एक मात्र उपाय है यथा प्रमाण ***रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा॥ (रा० च० मा० २/१३७)।*** अब यह जिज्ञासा है कि यह रामप्रेम आखिर कैसे प्राप्त होगा ? इसका उत्तर देते हुए श्रीरामचरितमानसकार लिखते हैं ***जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती॥*** बिना श्रीभगवान के स्वरूप का बोध हुए उनसे प्रेम नहीं प्रकट हो सकता है। अब जिज्ञासा है कि परब्रह्म भगवान के स्वरूप का बोध कौन करा सकता है ? इसका उत्तर श्रुति इस प्रकार देती है *तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्*

समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम् अर्थात् उस परमात्मा के विज्ञान को प्राप्त करने के लिए जीवात्मा को एक श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ अर्थात् श्रीरामप्रेमानुरागी गुरु की शरण में जाना चाहिए। अब जिज्ञासा है कि सद्गुरु की शरण में जाने पर किस पदार्थ की प्राप्ति होगी ? इसका उत्तर है श्रीवैष्णवीय षडक्षर राममंत्रराज दीक्षा। इसलिए इस राममंत्र दीक्षा का महत्व इसलिए है क्योंकि इसे प्राप्त कर लेने पर जीव सम्प्रदाय रूपी राजमार्ग पर अग्रसर होकर बड़ी ही सुलभता से सीताराम जी का सामीप्य प्राप्त कर लेता है।

राम मंत्र दीक्षा माहात्म्य

सुतीक्ष्ण ! मंत्र वर्गेषु श्रेष्ठो वैष्णव उच्यते।
गाणपत्येषु शैवेषु शाक्त सौरेष्वभीष्टदः॥
वैष्णवेष्वपि मंत्रेषु राममंत्र फलाधिकाः। (श्रीरामतापनीयोपनिषद एवं अगस्त्य संहिता)
सभी प्रकार के मंत्रों में वैष्णव मंत्र श्रेष्ठ हैं और सभी वैष्णव मंत्रों में भी श्रीराममंत्र अधिक फल प्रदान करने वाला है।

राम मंत्र विहीनानां शुद्धकर्मवतामपि।
विफला हि क्रियाः सर्वा इति वेदेषु कथ्यते॥ (वाल्मीकि संहिता २/१४)
राम मंत्र से रहित व्यक्ति द्वारा किए हुए सभी शुद्ध कर्म भी विफल हो जाते हैं ऐसा ही सभी वेदों का कथन है।

दीक्षान्तर शतेनापि नैतत्फलमवाप्यते।
दीक्षितेष्वपि सर्वेषु रामदीक्षित उत्तमः॥ (अगस्त्य संहिता)
सैकड़ों मंत्रों से दीक्षित होने पर भी वह फल प्राप्त नहीं होता जो उत्तम राम मंत्र की दीक्षा से प्राप्त हो जाता है।

राम मंत्र की दीक्षा मिलने पर जीवात्मा भगवत्साक्षात्कार का परमाधिकारी हो जाता है। उसे अपने स्वरूप का तथा भगवान के स्वरूप का सम्यक बोध हो जाता है। दीक्षोपरान्त एक जीवात्मा अर्थपञ्चक और अकारत्रय से सम्पन्न होकर इस परमश्रेष्ठ षडक्षर मंत्रराज की उपासना करते हुए सूर्यमण्डल का भेदन करते हुए त्रिपादमहाविभूति साकेत धाम को प्राप्त कर लेता है।

दीक्षा नियमावली

1. षडक्षर राममंत्र की दीक्षा के अनन्तर केवल श्रीसीतारामचन्द्र जी को ही सभी अवतारों के परम अवतारी स्वरूप में स्वीकार करते हुए श्रीसीतारामैकपरायण होकर केवल उनका ही भजन करना चाहिए।
2. नित्य प्रातः उठकर अपनी पवित्र गुरू परम्परा का स्मरण करके शौचादि कर्म से निवृत्त होकर स्नानादि करने के पश्चात् नित्य रूप से सर्वप्रथम श्रीरामानन्दीय ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करना चाहिए। केवल श्री कभी नहीं धारण करना चाहिए। रामानन्दीय तिलक का स्वरूप –

ललाटे तिलकं दधादूर्ध्वश्च स्वच्छ मृण्मयम् ।
सिंहासनोपरि श्रेष्ठ द्विरेखाञ्चरणा कृतिम् ।
स्थापयेज्जानकीरूपां तन्मध्ये श्रीं हरिद्रजाम् ॥

(सनत्कुमार संहिता)

3. सदा सर्वदा तुलसी की कण्ठी गले में धारण करे। इसमें शौचाशौच का विचार न करे यथा "*तुलसी काष्ठ सम्भूता न त्याज्या सा कदाचन (सनत्कुमार संहिता)*" सदा दोहरी कण्ठी ही धारण करना चाहिए यथा "*तुलसी मालिका सूक्ष्मा कण्ठलग्ना द्विधाकृती (सनत्कुमार संहिता ६/१५)*"।
4. प्रत्येक रामानन्दीय श्रीवैष्णव के गृह में तुलसी का पौधा अवश्य होना चाहिए क्योंकि तुलसी श्रीराम जी को श्रीजानकी जी के ही समान प्रिय है तथा "*विष्णोस्त्रैलोक्यनाथस्य रामस्य जनकात्मजा। प्रिया तथैव तुलसी सर्वलोकैक पावनी (अगस्त्य संहिता ६/४)*" तुलसीजी की सेवा से निर्मल सीतारामीय भक्ति की प्राप्ति होती है।

5. प्रत्येक रामानन्दीय श्रीवैष्णव अपनी गुरुपरम्परा प्रणाली के अनुसार तप्त अथवा शीतल धनुर्बाण मुद्रा धारण करनी चाहिए। जो यह मुद्रा धारण करता है वह श्रीरामजनों में अग्रणी हो जाता है यथा "*चक्रात्फलं शतगुणं धनुषः शरस्य यश्चाङ्कितोऽपि स च रामजनाग्रगण्यः (महारामायण २/१८)*"। कभी भूलकर भी धनुर्बाणाङ्कित होने के बाद चक्रादि चिन्ह धारण नहीं करना चाहिए यथा "*चाप बाणाङ्कितानां तु चक्र चिन्हं विवर्जितम् । (सनत्कुमार संहिता ८/१४)*"
6. दासान्त नाम केवल श्रीभगवान के साक्षात् नाम से ही सम्बन्धित होना चाहिए अन्य शक्ति या आवेशावतारों से सम्बन्धित नहीं यथा "*शिष्यन्तु राम सम्बन्ध नाम्ना वै प्रवदेत् पुनः । (सनत्कुमार संहिता)*" एवं "*शक्त्यावेषावताराणां वर्जयेन्नाम वैष्णवः (हारीत स्मृति)*"
7. प्रत्येक रामानन्दीय श्रीवैष्णव को एकादशी समेत श्रीरामनवमी-श्रीजानकीनवमी-श्रीहनुमज्जयन्ती-श्रीविजयदशमी-श्रीकूर्मद्वादशी-श्रीनृसिंहचतुर्दशी-श्रीकृष्णजन्माष्टमी आदि समस्त व्रत रखने चाहिए।
8. प्रत्येक रामानन्दीय को २१६०० सीतारामनाम जप नित्य करना चाहिए।
9. श्रीराम मंत्र का जप ६००० नहीं तो १००० नहीं तो ३०० नहीं तो कम से कम राममंत्र की एक माला तो करना ही चाहिए अन्यथा उसकी अधोगति निश्चित है यथा "*षट् सहस्रं सहस्रं वा त्रिशतं शतमेव वा। जपं वा कुर्यात्प्रयत्नेन नो चेत् प्राप्नोत्यधो गतिम्*" ॥
10. सीतारामोपासक श्रीवैष्णव को सदैव भगवन्निवेदित प्रसाद ही ग्रहण करना चाहिए।
11. एकादशी में किसी भी प्रकार के अन्न को ग्रहण न करें। यदि व्रत में भूख असहनीय हो तब एक समय भगवन्निवेदित फल का आहार ले लें और रात्रि में दुग्ध का पान कर लें।
12. भगवत्प्रसाद सदा ही शुद्ध भक्तिपूर्ण चित्त से ही बनावें। पुरुष पैंट पहनकर रसोई में प्रवेश न करें। चप्पल-जूता पहनकर भी रसोई में प्रवेश न करें। स्नान करके ही रसोई में प्रवेश करें। मल त्याग के पश्चात् स्नान अवश्य करें। मूत्र त्याग के बाद हाथ पैर धोएं एवं कुल्ला अवश्य करें। माताओं को मासिक धर्म में भोजन नहीं बनाना चाहिए।

13. तुलसी पत्र का चयन इस दिन एवं काल में नहीं करना चाहिए – मङ्गलवार, रविवार, द्वादशी, अमावस्या,पूर्णिमा, संक्रान्ति, सूतक काल, संध्याकाल ।
14. एक रामानन्दीय श्रीवैष्णव के लिए ज्ञेय ग्रन्थ श्रीमद्रामायण शास्त्र ही है। सभी दीक्षित साधकों को श्रीमद्वालमीकि रामायण एवं श्रीमद्रामचरितमानस का स्वाध्याय एवं गुरुमुख से नित्य श्रवण करना चाहिए।
15. श्रीअयोध्याजी, श्रीमिथिला, श्रीचित्रकूट आदि श्रीसीतारामविहारस्थलियों का वर्ष में श्रीरामनवमी-श्रीजानकीनवमी आदि महोत्सवों के समय अवश्य दर्शन करना चाहिए।
16. भूलकर भी सीतारामजी एवं हनुमान जी के अतिरिक्त किसी अन्य देवता का प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए। यदि सीतारामजी को निवेदित भोग ही अन्य देवता को अर्पित किया हो तब उसे ग्रहण कर सकते हैं।
17. एक सीतारामीय श्री वैष्णव को सदैव अपने पूजागृह में सीताराम जी, श्रीस्वामी रामानन्दाचार्य भगवान, श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज एवं अपने श्रीसद्गुरुदेव का छायाचित्र सादर विराजमान करना चाहिए।
18. यथायोग्य रूप से वैष्णव विप्रों एवं साधु-सन्तों की परिचर्या करनी चाहिए। उन्हें सुन्दर भगवत्प्रसाद अर्पित करना चाहिए। उन्हें वेषानुरूप वस्त्रदक्षिणादि अर्पित करना चाहिए।

श्रीराममंत्र जप नियमावली

स्नान से शुद्ध होकर तिलक धारण के अनन्तर विनियोग पूर्वक सद्गुरु प्रदत्त श्रीयुगलषडक्षर अथवा श्रीरामषडक्षर मंत्रराज का उचित संख्या में जप करना चाहिए। कभी भी अशुद्ध अवस्था में मंत्र का जप न करें। अन्य काल में सीतारामनाम का अधिक से अधिक संख्या में जप करें। निष्ठापूर्वक श्रीराममंत्र का जप करें। मंत्र का उच्चारण वैखरी से न करें, केवल उपांशु एवं मानसिक जप ही करें। सीताराम नाम का जप एवं कीर्तन वैखरी वाणी से करें। जप करते हुए तुलसी माला का अनामिका, अंगुष्ठ एवं मध्यमा से ही स्पर्श करें। केवल गोमुखी जपमाला का ही प्रयोग

करें। मंत्र जप करते समय सदा मंत्र के अर्थ का अनुसन्धान करना चाहिए। मंत्र जप के समय हिलना डुलना नहीं चाहिए। द्विजातियों को ब्रह्मगायत्रीजाप सहित ही रामषडक्षर मंत्रराज का जप करना चाहिए।

रामानन्दीय श्रीवैष्णव सम्प्रदाय परिचय

यह रामानन्दीय सम्प्रदाय षडक्षर रामतारक मंत्रराज की पवित्र परम्परा है जिसका आरम्भ सृष्टि के पूर्व में श्रीराघवेन्द्र सरकार द्वारा अपनी प्राणवल्लभा श्रीमज्जनकनरेन्द्रतनया श्रीजानकीजू को सविधि अपना परमश्रेष्ठ षडक्षर रामतारक मंत्रराज देकर किया। इस सम्प्रदाय का आदि नाम श्री सम्प्रदाय है क्योंकि श्रीजानकीजी ही सभी श्रियों की परम श्री हैं। यथा प्रमाण -

वसुधाया हि वसुधां श्रियः श्रीं भर्तृवत्सलाम् ।
सीतां सर्वानवद्याङ्गीमरण्ये विजने शुभाम् ॥ (वाल्मीकि रामायण ६.१११.२४)

सीता जी द्वारा बताई गई श्री सम्प्रदाय की गुरु परम्परा –

इममेव मनुं पूर्वं साकेतपतिर्मामवोचत् अहं हनुमते मम प्रियाय प्रियतराय । स वेद वेदिने ब्रह्मणे स वशिष्ठाय। स पराशराय। स व्यासाय। स शुकाय। इत्येषोपनिषत् । इत्येषाब्रह्मविद्या

वाल्मीकि संहितास्थ श्रीमैथिलीमहोपनिषद्

प्रकृत उपनिषद् में लाट्यायन प्रभृति महर्षियों को विशिष्ट तत्त्वोपदेशान्तर श्रीराम महामन्त्रराज की परम्परा के विषय में सर्वेश्वरी श्रीसीताजी कहती हैं यही षडक्षर श्रीराम महामन्त्र को दिव्यलोक में श्रीसाकेताधिनायक सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी ने मुझे कहा अर्थात् सविधि उपदेश दिया। मैंने मेरे प्रियातिप्रिय सेवक मरुतनन्दन श्रीहनुमानजी को यथाशास्त्र विधि विधान से उपदेश दिया। श्रीहनुमानजी ने भी शास्त्रीय विधान से वेद के ज्ञाता श्रीब्रह्माजी को उपदेश दिया। श्रीब्रह्माजी ने भी शास्त्र विधान के अनुसार ही स्वमानस पुत्र श्रीवशिष्ठजी को उपदेश दिया। श्रीवशिष्ठ जी ने शास्त्रीय विधि से श्रीपराशरजी को उपदेश दिया। श्रीपराशरजी ने शास्त्र विधान के 'अनुसार श्रीव्यासजी को उपदेश दिया। श्रीव्यासजी ने शास्त्र विधानानुसार श्रीशुकदेवजी को उपदेश दिया। यही उपनिषद् श्रीरामचन्द्रजी के दिव्यधाम श्रीसाकेत में जाने का साधन है।

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि संहिता में भी श्रीसम्प्रदाय की गुरु परम्परा का उल्लेख है यथा –

इदं तु परमं तत्वं देवानामप्यगोचरम् । भगवान् रामचन्द्रो वै परं ब्रह्म श्रुतिश्रुतः ॥
इमां सृष्टिं समुत्पाद्य जीवानां हितकाम्यया। तारकं मन्त्रराजं तु श्रावयामास ईश्वरः॥
श्रावयामास नूनं स ब्रह्माणं सुधियांवरम् । पृष्टं युष्याभिरनधं कथ्यते श्रृणुतर्षयः ॥
दयालुः शरणं नित्यं दासानां दीनचेतसाम् । आद्यांशक्तिं महादेवीं श्रीसीतां जनकात्मजाम् ॥
जानकी तु जगन्माता हनुमन्तं गुणाकरम् । तस्माल्लेभे वशिष्ठर्षिः क्रमादस्मादवातरम् ॥
भूमौ हि राममन्त्रोऽयं योगिनां सुखदः शिवः । एवं क्रमं समासाद्य मन्त्रराजपरम्परा ॥

श्रीस्वामी रामानन्दाचार्य पर्यन्त गुरु परम्परा का प्रणयन श्रीअग्रदेवजी महाराज ने किया यथा –

श्रीराममन्त्रराज परम्परा

श्रीमान् अग्रदास उवाच

शुभासने समासीनमनन्तानन्दमच्युतम् । कृष्णदासो नमस्कृत्य पप्रच्छ गुरुसन्ततिम् ॥ १ ॥

श्री कृष्णदास उवाच

भगवन्यतीनां श्रेष्ठ ! प्रपन्नोऽस्मि दयां कुरु । ज्ञातुमिच्छाम्यहं सर्वां पूर्वेषां सत्परम्पराम् ॥ २ ॥
मन्त्रराजश्च केनादौ प्रोक्तः कस्मै पुरा विभो। कथञ्च भुवि विख्यातो मन्त्रोऽयं मोक्षदायकः ॥ ३ ॥

श्रीमान् अग्रदास उवाच

कृष्णदासवचः श्रुत्वाऽनन्तानन्दो दयानिधिः । उवाच श्रूयतां सौम्य ! वक्ष्यामि तद्यथाक्रमम् ॥ ४ ॥

श्रीमान् अनन्तानन्द उवाच

परधाम्नि स्थितो रामः पुण्डरीकायतेक्षणः । सेवया परया जुष्टो जानक्यै तारकं ददौ ॥ ५ ॥
श्रियः श्रीरपि लोकानां दुःखोद्धरणहेतवे । हनूमते ददौ मन्त्रं सदा रामाङ्घ्रिसेविने ॥ ६ ॥
ततस्तु ब्रह्मणा प्राप्तो मुह्यमानेन मायया। कल्पान्तरे तु रामो वै ब्रह्मणे दत्तवानिमम् ॥ ७ ॥
मन्त्रराजजपं कृत्वा धाता निर्मातृतां गतः। त्रयीसारमिमं धातुर्वशिष्ठो लब्धवान् परम् ॥ ८ ॥
पराशरो वशिष्ठाच्च सर्वसंस्कारसंयुतम् । मन्त्रराजं परं लब्ध्वा कृतकृत्यो बभूव ह ॥ १ ॥

पराशस्य सत्पुत्रो व्यासः सत्यवती सुतः । पितुः षडक्षरं लब्ध्वा चक्रे वेदोपबृंहणम् ॥ १० ॥

व्यासोऽपि बहुशिष्येषु मन्वानः शुभयोग्यतम् । परमहंसवर्याय शुकदेवाय दत्तवान् ॥ ११ ॥

शुकदेवकृपापात्रो ब्रह्मचर्यव्रतेस्थितः । नरोत्तमस्तु तच्छिष्यो निर्वाणपदवीं गतः ॥ १२ ॥

स चापि परमाचार्यो गंगाधराय सूरये। मन्त्राणां परमं तत्वं राममन्त्रं प्रदत्तवान् ॥ १३ ॥

गंगाधरात्सदाचार्यस्ततो रामेश्वरो यतिः । द्वारानन्दस्ततो लब्ध्वा परब्रह्मरतोऽभवत् ॥ १४ ॥

देवानन्दस्तु तच्छिष्यः श्यामानन्दस्ततोऽभवत् । तत्सेवया श्रुताननन्दश्चिदानन्दस्ततोऽभवत् ॥ १५ ॥ पूर्णानन्दस्ततो लब्ध्वा श्रियानन्दाय दत्तवान् । हर्यानन्दो महायोगी श्रियानन्दङ्घ्रिसेवकः ॥ १६ ॥ हर्यानन्दस्य शिष्यो हि राघवानन्द देशिकः । यस्य वै शिष्यतां प्राप्तो रामानन्दः स्वयं हरिः ॥ १७ ॥ तस्माद् गुरुवराल्लब्ध्वा देवानामपि दुर्लभम् । प्रादात्तुभ्यमहं तात गुह्यं तारकसंज्ञकम् ॥ १८ ॥

एवं परम्परा सौम्य प्रोक्ता श्रीसम्प्रदायिनाम् । मन्त्रराजस्य चाख्यातिर्भूम्यामेवमवातरत् ॥ १९ ॥

श्रीमान् अग्रदास उवाच

कृष्णदासस्तु तच्छ्रुत्वा लेभे परमहर्षताम् । साष्टाङ्ग प्रणतिं कृत्वा वचनं चेदमब्रवीत् ॥ २० ॥

श्रीकृष्णदास उवाच

पीत्वा श्रीमुखवाक्यजन्यममृतं तापत्रयोद्धारकं,
श्रुत्वा वेदनिगूढतत्वजनिकां वाणीं समुल्लासिनीम् ।
हित्वा मोक्षदरामतारकमिमं जाने न सारं परं,
नीत्वा कालमहं सुसाधकधिया वक्तुं न शक्नोम्यलम् ॥ २१ ॥

श्रीमान् अग्रदास उवाच-

यः पठेच्छ्रद्धया नित्यं पूर्वाचार्य परम्पराम् । मन्त्रराजरतिं प्राप्य सद्यो रामपदं व्रजेत् ॥ २२ ॥

आद्य जगद्गुरू श्रीस्वामीरामानन्दाचार्य भगवान का संक्षिप्त परिचय

जगद्गुरू श्रीस्वामीरामानन्दाचार्य भगवान का प्राकट्य आज से ७२६ वर्ष पूर्व १२९९ ईस्वी की माघ कृष्ण सप्तमी को हुआ। वे साक्षात् श्रीरामजी के ही अवतार थे यथा वैश्वानर संहितायाम् –

माघे च कृष्ण सप्तम्यां चित्रा नक्षत्र संयुते।
कुम्भ लग्ने सिद्धि योगे द्विसप्तदण्डके तथा ॥
रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतस्स्वयं हरिः।
कलौखलु मुनिर्जातः सर्वजीवदया करः ॥
तप्तकाञ्चन संकाशो रामानन्दः स्वयं हरिः।
प्रियानुरागदिव्यत्व कृते रामः कृपानिधिः ॥
हेमवर्णस्तदर्थतैर्विख्यातश्च महीतले।
रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो हरिस्त्वयम् ॥

माघ कृष्ण सप्तमी को चित्रा नक्षत्र में, कुम्भ लग्न में, सिद्धि योग में सूर्य के सात दण्ड चढ़े स्वयं हरि श्री रामचंद्र भगवान श्री रामानंद स्वरूप में प्रकट हुए। कलियुग में भगवान सभी जीवों पर दया करने हेतु मुनि के रूप में अवतार ग्रहण किये। उनका वर्ण तप्त स्वर्ण के समान है और यह वर्ण उन्होंने अपनी प्रिय श्री जनकनन्दिनी श्री किशोरी जी के दिव्य अनुराग के कारण ग्रहण किया है।

रामानन्दीयश्रीवैष्णव सम्प्रदाय का सिद्धान्त – सीतारामीय विशिष्टाद्वैत

विशिष्टश्च विशिष्टश्च विशिष्टे तयोर्विशिष्टयोरद्वैतम् विशिष्टाद्वैतम् – चिदचिद्विशिष्ट कार्य ब्रह्म श्रीजानकी एवं चिदचिद्विशिष्ट कारण ब्रह्म श्रीराम का विशिष्ट प्रकार से अद्वैत ही विशिष्टाद्वैत है। परमात्मा सीतारामजी प्रकृति और जीवात्मा दोनों के नियामक और शेषी हैं। विशिष्टाद्वैत में भगवान के पांच मुख्य स्वरूप हैं। पर-व्यूह-विभव-अन्तर्यामी-अर्चावतार। विशिष्टाद्वैत में जीव सदा भगवान श्रीराम का शेष है। जगत भगवान् श्रीराम का शरीर है यथा – जगत्सर्वं शरीरं ते (वाल्मीकि रामायण यु०का०)। अकारत्रय का सिद्धान्त – अनन्य भोग्यत्व। अनन्य शेषत्व। अनन्यार्हत्व। जीवात्मा के तीन स्वरूप स्वीकार किए गए हैं – बद्ध। मुक्त। नित्य मुक्त। भक्ति और प्रपत्ति के मध्य प्रपत्ति को श्रेष्ठ माना गया है। प्रपन्न के दो स्वरूप स्वीकार किए गए हैं – दृप्त प्रपन्न और आर्त प्रपन्न। भगवान् श्रीराम सदैव सर्व दिव्यगुणसम्पन्न है यथा वाल्मीकि रामायणे

– स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्द वर्धनः। भगवान के निर्गुण होने का अभिप्राय केवल उनके हेय गुणों से रहित होने से है। भगवान् का शरीर मायिक नहीं है। उनका शरीर सच्चिदानन्द है यथा – चिदानन्द मय देह तुम्हारी (रा० च० मा०)। भगवान श्रीसीताराम का निज धाम साकेत नित्य है जिसका महाप्रलय में भी नाश नहीं होता। दो प्रकार के अभिमान स्वीकार किए गए हैं – ईष्टाभिमान और आचार्याभिमान। भगवान श्रीसीताराम जी को केवल प्रेम द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

श्रीरामकथा कुञ्ज मण्डप की आचार्य परम्परा

(१) श्री सर्वावतारी भगवान राघवेन्द्र सरकार
(२) श्री जगज्जननी पराम्बा परमेश्वरी भगवती जानकी (सीता) जी
(३) श्री अनन्त बलवन्त श्रीहनुमान् जी
(४) श्री चतुर्मुख ब्रह्मा जी
(५) श्री वशिष्ठ जी
(६) श्री पाराशर मुनि जी
(७) श्री वेदव्यास जी
(८) श्री शुकदेव मुनि जी
(९) श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी (बोधायन) महाराज
(१०) श्री गंगाधराचार्य जी महाराज
(११) श्री सदानन्दाचार्य जी महाराज
(१२) श्री रामेश्वरानन्दाचार्य जी महाराज
(१३) श्री द्वारानन्दाचार्य जी महाराज
(१४) श्री देवानन्दाचार्य जी महाराज
(१५) श्री श्यामानन्दाचार्य जी महाराज
(१६) श्री श्रुतानन्दाचार्य जी महाराज
(१७) श्री चिदानन्दाचार्य जी महाराज
(१८) श्री पूर्णानन्दाचार्य जी महाराज

(१९) श्री श्रियानन्दाचार्य जी महाराज

(२०) श्री हर्यानन्दाचार्य जी महाराज

(२१) श्री राघवानन्दाचार्य जी महाराज

(२२) श्रीरामावतार हिन्दूधर्मोद्धारक जगद्गुरुश्रीमदाद्यरामानन्दाचार्यजी महाराज

(२३) श्रीकपिलावतार श्रीयोगानन्दाचार्य जी महाराज

(२४) श्री गयानन्दाचार्य जी महाराज

(२५) श्री तुलसीदास जी महाराज

(२६) श्री नथूरामाचार्य जी महाराज

(२७) श्री चौगानीदेवाचार्य जी महाराज

(२८) श्री उधामदानी देवाचार्य जी महाराज

(२९) श्री खेमदासाचार्य जी महाराज

(३०) श्री रामदासाचार्य जी महाराज

(३१) श्री लक्ष्मणदासाचार्य जी महाराज

(३२) श्री देवदासाचार्य जी महाराज

(३३) श्री भगवानदासाचार्य जी महाराज

(३४) श्री बालकृष्णदासाचार्य जी महाराज

(३५) श्री वेणीदासाचार्य जी महाराज

(३६) श्री श्रवणदासाचार्य जी महाराज

(३७) श्री रामवचनदासाचार्य जी महाराज

(३८) श्री अखिलजगदोद्धारक विद्वद्मार्तण्ड पण्डितप्रवर श्रीरामवल्लभाशरण जी महाराज

(३९) श्रीपण्डितप्रवर अखिलेश्वरदास जी महाराज

(४०) विशिष्टाद्वैतानुवर्ती विद्वन्मूर्ति श्रीस्वामी रामानन्ददास जी महाराज